C-9 Assessment for Learning :-

Self Learning (स्वयं-अधिगम)

:- स्वयं अधिगम में रोचकता तथा प्रभावशीलता का विकास होता है। इसके अन्तर्गत अधिगमकर्ता विषय के रटने पर जोर नहीं देता है। इसमें आत्म-विश्वास तथा आत्मनिर्भरता का विकास होता है।

Principles of Self Learning

(1) क्रियात्मक या क्रिया द्वारा शिक्षा का सिद्धान्त :-

इस सिद्धान्त के अन्तर्गत अधिगम कर्ता क्रिया के द्वारा शिक्षा ग्रहण करके अधिगम प्राप्त करता है अर्थात जैसे कि क्रिया के द्वारा करके सीखना

सिखते रहता है। अतः अधिगम क्रियात्मक रूप से अधिगम प्राप्त करता है।

(2) अनुभव का सिद्धान्त :-

अधिगम कर्ता किसी भी क्षेत्र में जैसे: खेल-कूद, शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक के क्षेत्र में सफल अधिगम अनुभव के आधार पर प्राप्त करता है। एक अनुभवी व्यक्ति में सिखने की क्षमता अधिक पायी जाती है। जो व्यक्ति ~~जितना~~ जितना ही अनुभवी होता है वह उतना ही अधिक अधिगम प्राप्त करता है।

(3) स्वतंत्रता का सिद्धान्त :-

व्यक्ति को अधिगम प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र रहना अति-आवश्यक होता है। जो व्यक्ति स्वतंत्र ~~वातावरण~~ वातावरण में जिस प्रकार से सिखता वह काफी प्रभावशाली होता है।

(4) खेलने का सिद्धांत :- छात्र

खेल-कूद के द्वारा भी स्वयं अधिगम करते-रहते है। खेलने के क्रम में छात्र कुछ-न कुछ हमेशा सिखते रहते है।

(5) उद्देश्य का सिद्धान्त :-

जब किसी व्यक्ति को सिखने के लिए प्रेरित किया जाता है तो सबसे पहले उसे उद्देश्य के बारे में बताया जाता है। कोई व्यक्ति अधिगम तभी प्राप्त कर सकता है जब उसे अधिगम के लिए उद्देश्य हो।

Role of the Teacher in Self Learning :-

स्वयं अधिगम में अध्यापक का स्थान :-

छात्र स्वयं सभी तथ्यों की जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता अतः उन्हे

M I-9 B.Sc (vivo)

अध्यापक की सहायता होती है। जो आवश्यक पर्याप्त जानकारी तथा ज्ञान अर्जित करता है व छात्रों को सही प्रकार से सिखाता है। अतः छात्र अध्यापक की सहायता से अधिगम प्राप्त करते हैं। अध्यापक छात्रों को उत्साहित करके अधिगम के लिए प्रेरित करता है। अध्यापक को धैर्यशील तथा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण होना अति आवश्यक है।

Merits of Self Learning

स्वयं अधिगम के लाभ :

(1) इसके द्वारा छात्रों के दृष्टिकोण को वैज्ञानिक एवं विवेचनात्मक बनाया जाता है

(2) ये छात्रों में अन्वेषण की भावना उत्पन्न करते हैं

3. ये छात्रों में कठोर परिश्रम की आदत डालती है क्योंकि वे समस्या-समाधान के का…

में ~~जाग~~ जागृत रहते हैं।

4. इसके द्वारा छात्रों में आत्म क्रियाशीलता की भावना का विकास किया जाता है।

5. इसके द्वारा छात्रों में नये नये काम करने का उत्साह आत्म-विश्वास तथा आत्म-निर्भरता की भावना उत्पन्न करता है।

6. इनमें अधिगम स्थाई और प्रभावशाली होता है।

7. इनसे छात्रों में पारस्परिक तथा अध्यापकों से सम्बन्ध गहरा होता है।

8. इनसे छात्रों में रटन्त कार्य का भय नहीं रहता है।

9. इसके द्वारा छात्रों में मौलिकता का विकास होता है

10. इनसे छात्रों में अनुशासनहीनता की समस्या नहीं रहती है

Limitations of self Learning

स्वयं अधिगम की सीमाएं

1. बालकों की बुद्धि अपरिपक्व होती हैं। उन्हें आविष्कारकों तथा खोजियों की स्थिति में नहीं रख सकते।
2. अनेक तकनीकें बहुत मन्द गति वाली हैं।
3. प्राथमिक कक्षाओं के लिए यह प्रणाली उपयुक्त नहीं है।
4. यह प्रणाली हर स्थान पर और हर समय प्रयोग में नहीं लाई जा सकती है।

Attitude (मनोवृत्ति)

:- मनोवृत्ति व्यक्ति के उस दृष्टिकोण की ओर संकेत करती है, जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट भांति व्यवहार करता है।

किम्बाल यंग के अनुसार :- मनोवृ-

अनिवार्य रूप से एक पूर्वगामी प्रतिक्रिया का कारण है, क्रिया का एक आरम्भ है।

बिट के अनुसार :- मनोवृत्ति नाड़ी सम्बन्धी तथा मानसिक तत्परता की अवस्था है जो अनुभव से सम्बन्धित सभी वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति क्रिया पर निर्देशात्मक प्रभाव डालती है।

Characteristics of Attitude

मनोवृत्ति के विशेषताएँ निम्न-लिखित हैं।

1. मनोवृत्ति का प्रसार असीमित है।
2. मनोवृत्तियों में व्यक्तिगत विभेद होते हैं।
3. मनोवृत्तियाँ हमारे व्यवहार का कारण है।
4. ये व्यक्त भी हो सकते हैं और अव्यक्त भी।

5. मनोवृत्तियाँ हमारे सम्पूर्ण व्यवहार संगठन में समन्वित होते हैं।

6. ये वातावरणजन्य हैं, न कि जन्मजात।

7. मनोवृत्तियाँ पर्याप्त रूप से स्थायी होती हैं।

8. इनके दो पक्ष हैं - जिसकी मनोवृत्ति है और जिसके प्रति है।

9.

Thinking skill :- (चिन्तन कौशल) :-

गिलफोर्ड ने चिन्तन सम्बंधी विचारों का वर्णन करते हुए समस्या हल सम्बंधी महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत किया है। चिन्तन - कौशल से सम्बन्धित बौद्धिक प्रक्रिया का प्रभाव निम्नलिखित है।

(1) संज्ञान (Cognitive) :- संज्ञान से तात्पर्य खोज अथवा पहचान से है।

Date
Page

2 स्मृति (Memory) :- बोध की गई सामग्री का भण्डारण है।

3. अभिसरण चिन्तन :- जब हमें उपलब्ध सूचना एक सही उत्तर की ओर ले जाती है जो सर्वोत्तम या परम्परागत हो तो हम अभिसरण चिन्तन का प्रयोग करते हैं।

4 अपसरण चिन्तन :- अपसरण चिन्तन में हम विभिन्न दिशाओं में क्रिया करते हैं कभी कुछ खोज करते हैं और कभी विभिन्नताओं की खोज करते हैं।

5. मूल्यांकन :- इसमें हम ऐसे निर्णयों पर पहुँचते हैं जैसे - अच्छा, सही। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित होते हैं

(1) तर्क और समस्या का हल

तर्क शक्ति क्रमशः धीरे-धीरे विकसित होती है। इसका प्रादुर्भाव अचानक नहीं होता है। बालक स्कूल जाने की अवस्था से पहले की अवस्था में समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखते हैं।